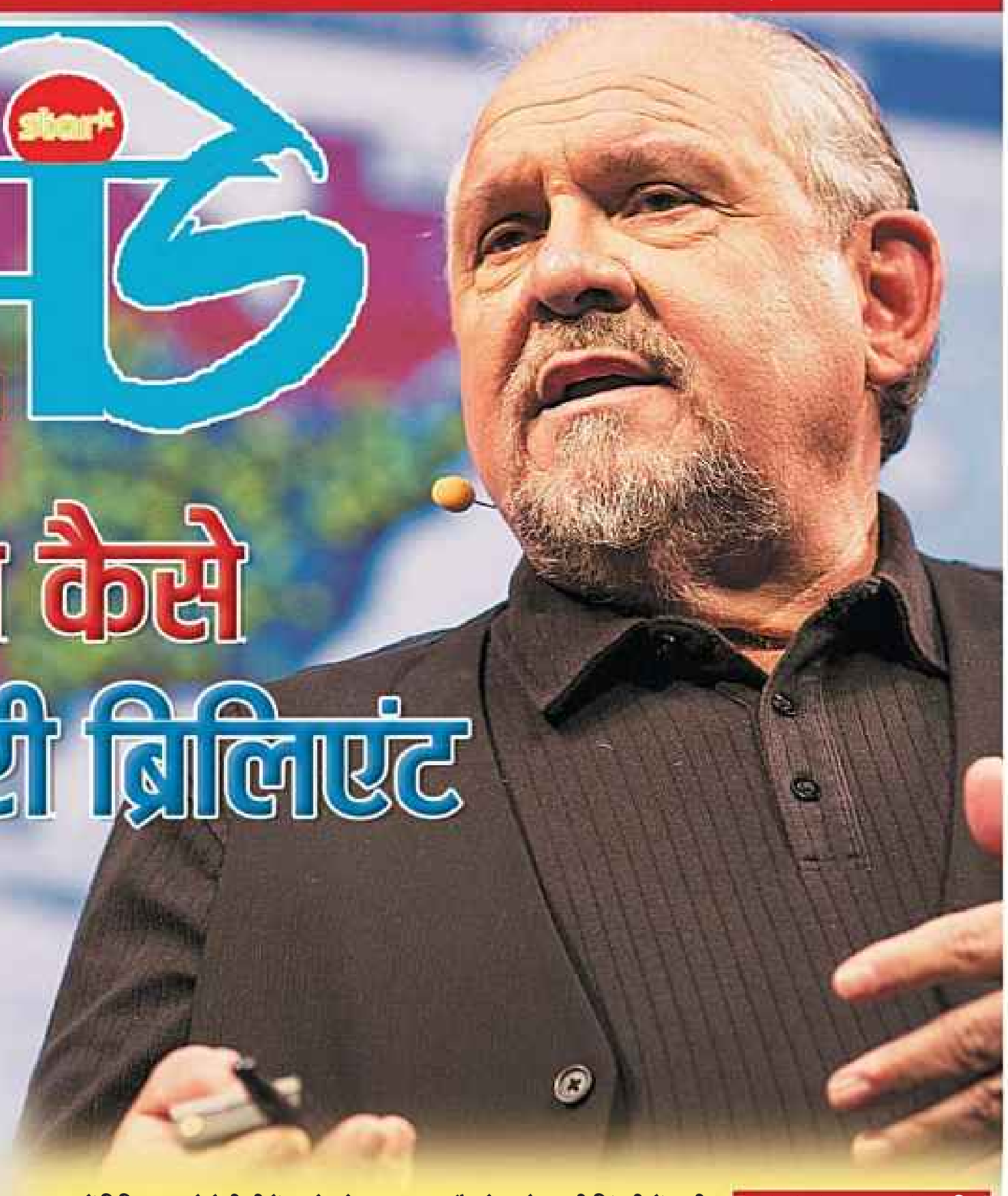
संजय सीरीज
बी.ए., बी.एस-सी., बी.कॉम., एम.ए. की सेमेस्टर, प्राइवेट तथा भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय, दूरवर्ती परीक्षाओं के लिए अवश्य पढ़े
गया प्रसाद अग्रवाल एण्ड संस, सतना

स्टार संडे



इस महामारी से कैसे निपटे दुनिया: लैरी ब्रिलिएंट

लैरी ब्रिलिएंट कहते हैं कि उनके पास क्रिस्टल बॉल नहीं है। लेकिन 14 साल पहले, चेचक को मिटाने में मदद करने वाले महामारी विशेषज्ञ ब्रिलिएंट ने, सन् 2006 में टेड के दर्शकों से बात की थी और बताया था कि अगली महामारी कैसी होगी। उस समय, यह गंभीरता से लेने के हिसाब से बहुत भयानक लग रहा था। उन्होंने कहा था, 'एक अरब लोग बीमार हो जाएंगे। करीब 100 मिलियन लोग मारे जाएंगे। 100 मिलियन लोगों की मौत से ज्यादा, वैश्विक मंदी और अवसाद होगा, और अर्थव्यवस्था पर 1 से 3 ट्रिलियन डॉलर का असर पड़ेगा, क्योंकि इतने सारे लोग अपनी नौकरी और हेल्थकेयर लाभ खो देंगे, कि परिणाम लगभग अकल्पनीय हैं।'

अब अकल्पनीय महामारी आ गई है, और ब्रिलिएंट, बोर्ड ऑफ एंडिंग पांडेमिक्स के अध्यक्ष, लोगों के साथ अपनी विशेषज्ञता साझा कर रहे हैं। नोवेल कोरोनावायरस के कारण 100 मिलियन लोगों की मौत होना दूर की बात है, लेकिन इसने हमारी दुनिया में अफरा-तफरा मचा दी है। ब्रिलिएंट अक्सर कोशिश करते हैं कि उन्हें 'मैंने आपको ऐसा कहा था' न कहना पड़े। लेकिन उन्होंने हमें ऐसा बताया, न केवल बातचीत और लेखन में, बल्कि महामारी की हॉरर फिल्म 'कॉन्टेजियन' के वरिष्ठ तकनीकी सलाहकार के रूप में भी, जो अब होमबाउंड के लिए एक शीर्ष स्ट्रीमिंग चुनाव है। चेचक को खत्म करने के प्रयास में विश्व स्वास्थ्य संगठन के साथ काम करने के अलावा, 75 साल के ब्रिलिएंट, फ्लू, पोलियो और अंधापन से लड़ चुके हैं; गूगल के गैर-लाभकारी विंग, गूगल.ऑर्ग का नेतृत्व कर चुके हैं; कॉन्फ्रेंसिंग सिस्टम द वेल की सह-स्थापना की है; और ग्रेटफुल डेड के साथ यात्रा की है। हाल ही में, ब्रिलिएंट ने एक इंटरव्यू के दौरान महामारी से अपनी जंग और कोविड-19 के बारे में बात की।

» 2006 में जब आपने वह टेड टॉक दिया था, आपकी इच्छा 'महामारी रोकने में मेरी मदद करो' थी। आपकी इच्छा पूरी नहीं हुई, क्या हुई?

नहीं, मुझे वह इच्छा बिल्कुल पूरी नहीं हुई, हालांकि मैंने जो सिस्टम मांगा था वह निश्चित रूप से बनाया गया है और इसका उपयोग किया जा रहा है। यह बहुत ही मजेदार है क्योंकि हमने एक फिल्म की थी, कॉन्टेजियन - हम सब अब उस फिल्म को देख रहे हैं। लोगों का कहना है कि कॉन्टेजियन भविष्यदर्शी है। हमने सिर्फ विज्ञान को देखा। पूरे महामारी विज्ञान समुदाय ने पिछले 10 या 15 वर्षों से हर किसी को चेतावनी दी है कि सवाल यह नहीं था कि क्या इस तरह की महामारी होने जा रही हैं। मेरा मतलब है, ट्रम्प ने राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद के एडमिरल को बाहर कर दिया, जो उस स्तर पर महामारी से रक्षा के लिए जिम्मेदार एकमात्र व्यक्ति थे। उनके साथ उनके कर्मचारियों और स्टाफ की पूरी डाउनलाइन चली गई। और फिर ट्रम्प ने दुनिया भर के देशों की [प्रारंभिक चेतावनी] फंडिंग को हटा दिया।

» आप इस महत्व के बारे में बात करते हैं कि यह एक 'नोवेल' वायरस है।

इसका मतलब काल्पनिक वायरस नहीं है। यह उपन्यास नहीं है। बहुत बुरा। इसका मतलब है कि यह नया है। दुनिया में कोई भी ऐसा इंसान नहीं है जिसे पहले कभी यह रोग हुआ है, और जो इससे इम्यून हो। इसका मतलब है कि यह 7.8 बिलियन की आबादी को संक्रमित करने में सक्षम है।

» चूंकि यह नया है, हम अभी भी इसके बारे में सीख रहे हैं। क्या आप मानते हैं कि अगर किसी को यह होता है और ठीक हो जाता है, तो उसके बाद उस व्यक्ति में इम्यून पैदा हो जाती है?

इसलिए मुझे इस वायरस में ऐसा कुछ भी नहीं दिख रहा, भले ही यह नया हो। ऐसे कई मामले हैं जहां लोग सोचते हैं कि उन्होंने फिर से यह हो गया है, [लेकिन] असल में दोबारा संक्रमण होने से ज्यादा जांच फेल होने की अधिक संभावना है। लेकिन हममें से करोड़ों या उससे अधिक लोग होंगे, जो इस वायरस के खत्म होने से पहले ही इसकी जद में आएंगे, और इतनी संख्या के साथ, लगभग कहीं भी आपसे पूछा जा सकता है कि क्या आपको यह हुआ है। इसका मतलब यह नहीं है कि यह सार्वजनिक स्वास्थ्य या महामारी विज्ञान के हिसाब से बेहद महत्वपूर्ण है।



» क्या यह अब तक का सबसे बुरा प्रकोप है?

यह हमारे जीवनकाल की सबसे खतरनाक महामारी है।

» हमें निश्चित रूप से ऐसी चीजें करने को कहा जा रहा है, जो हमने अपनी ज़िंदगी में कभी नहीं की है- घर में रहें, अन्य लोगों से 6 फीट दूर रहें, सामूहिक समारोहों में न जाएं। क्या हमें सही सलाह मिल रही है?

वैसे, अगर आप मेरी बात करें, तो मैं दिखावा कर रहा हूं कि मैं एक मेडिटेशन रिट्रीट में हूं, लेकिन मैं वास्तव में मरीन काउंटी में सेमी क्वारैंटाइन हूं। हां, यह बहुत अच्छी सलाह है। लेकिन यूएसए में हमें पहले 12 हफ्तों में राष्ट्रपति से क्या कोई अच्छी सलाह मिली? नहीं, बस झूठ कहा गया। कहा गया कि यह एक डेमोक्रेटिक धोखा है, फर्जी है। आज भी ऐसे लोग हैं जो मानते हैं कि, यह सब उनके नुकसान के लिए है। एक सार्वजनिक स्वास्थ्य कर्मी के रूप में बात करूं, तो यह मेरी ज़िंदगी में किसी निर्वाचित अधिकारी का सबसे गैर जिम्मेदाराना कार्य है। लेकिन अब आप बिल्कुल सही बात सुन रहे हैं [स्कूल बंद करना, कार्यक्रम रद्द करना]। क्या इससे हमारी पूरी तरह से रक्षा होने वाली है? क्या इससे दुनिया हमेशा के लिए सुरक्षित बनने वाली है? नहीं। यह बहुत अच्छी बात है क्योंकि हम समय के साथ इस बीमारी को फैलाना चाहते हैं।

» इसका क्या फायदा होगा?

इस तरह की सावधानियों से मामलों की संख्या कम नहीं होने वाली, लेकिन नए संक्रमणों होने से रोका जा सकता है, जब तक कि हमें इसकी उचित वैक्सीन न मिल जाए।

» अब जबकि हमने प्रारंभिक परीक्षण का अवसर गंवा दिया है, तो क्या परीक्षण में बहुत देर हो गई है?

बिलकुल नहीं। टेस्ट से एक औसत दर्जे का अंतर आता। हमें यह पता लगाने के लिए आम जनों के भी नमूने लेकर स्टोकेस्टिक प्रक्रिया करनी चाहिए कि यह वायरस असल में है क्या। मिसिसिपी में कोई मामला नहीं आया क्योंकि ऐसा कुछ नहीं दिख रहा। उन्हें कैसे पता चला? ज़िम्बाब्वे में इसका कोई मामला नहीं मिला क्योंकि उनके पास परीक्षण क्षमता नहीं है, इसलिए नहीं कि वहां वायरस नहीं है। हमें ऐसी चीज़ की ज़रूरत है, जो होम प्रेगनेंसी टेस्ट की तरह हो, जिसे आप घर पर ही कर सकें।

हमें कैसे पता चलेगा कि इससे किस तरह निपटें?

जब तक तीन चीजें नहीं हो जातीं, तब तक दुनिया सामान्य नहीं दिखाई देने वाली है। एक, हम यह पता लगाए कि क्या इस वायरस का फैलाव किसी हिमखंड की तरह है, जिसका सिर्फ एक-सातवां हिस्सा ही पानी से ऊपर होता है, या पिरामिड की तरह जहां हम सब कुछ देखते हैं। यदि हम अभी केवल वास्तविक बीमारी के सातवें हिस्से को देख रहे हैं क्योंकि हम पर्याप्त परीक्षण नहीं कर पा रहे हैं, तो दुनिया खतरे में हैं। दो, हमें इसका टीका या एंटीवायरल विकसित करना होगा। और तीन, शायद सबसे महत्वपूर्ण, हमें बड़ी संख्या में यह जांचना होगा कि क्या लोग- विशेष रूप से नर्स, होम हेल्थ केयर प्रोवाइडर्स, डॉक्टर, पुलिसकर्मी, फायरमैन, और शिक्षक, जिन्हें यह बीमारी है - उनमें प्रतिरक्षा विकसित हो गई है या नहीं, और हमने यह जानने के लिए उनका परीक्षण करना चाहिए कि वे अब संक्रामक नहीं हैं। और हमारे पास एक सिस्टम होना चाहिए जो उनकी पहचान करे, जैसे कोई रिस्टबैंड या आईकार्ड। तब हम अपने बच्चों को वापस स्कूल भेजने में सहज हो सकते हैं, क्योंकि हम जानते हैं कि शिक्षक संक्रामक नहीं है।

क्या हमें मास्क पहनना चाहिए?

एन95 मास्क अपने आप में बेहद अद्भुत है। मास्क में 0.2 माइक्रोन चौड़े छेद होते हैं। वायरस 0.12 माइक्रोन चौड़ा होता है। तो आपको ऐसे लोग मिलेंगे जो कहते हैं, कि यह काम करने वाला नहीं है। लेकिन आप सोचिए कि तीन भारी-भरकम फुटबॉल खिलाड़ी क्या एक छोटे से अंदर जा सकते हैं, नहीं। नवीनतम आंकड़ों में मैंने देखा, यह मास्क 5 गुना सुरक्षा देता है। यह बहुत अच्छा है। लेकिन हमें अस्पतालों को चालू रखना होगा और हमें स्वास्थ्य पेशेवरों को काम पर आने और सुरक्षित रखने में सक्षम बनाना होगा।

वह स्त्री



» डॉ प्रदीप उपाध्याय

चित्रांकन : हरीश

मैंने उसे बचपन से देखा था और उसके बारे में बहुत कुछ जानता भी हूं क्योंकि उसे छोटी से बड़ी और वृद्धा होते हुए भी देखा था। एक दिन अचानक ख्याल आया कि क्यों न उस स्त्री पर ही एक कहानी लिखूं। यही सोचकर मैंने कहानी बुनना शुरू कर दी। लेकिन प्रश्न फिर कौंधा कि कहां से शुरुआत करूं। जैसे पहले मैंने उसी से प्रश्न कर दिया हो कि – 'कल्पना मैं तुम्हारी जिन्दगी पर एक कहानी लिखना चाहता हूं।' और वह बोल पड़ी हो– 'क्यों! ऐसा क्या है! जो तुम मुझपर कहानी लिखना चाहते हो। और वैसे भी मेरी जिन्दगी की कहानी पूरी भी कहां हो सकी जो इसपर कोई कहानी बन सके?' बात तो सही भी थी। फिर जैसे मैंने उससे कहा हो – 'देखो, तुमने जहां से शुरू किया था, और जहां से आगे बढ़ी और ठहर गई तो मेरे जेहन में कई सवाल आए और इन्हीं सवाल –जवाब में तुम्हारी कहानी तलाश कर लिखना चाहता हूं।'

मैं उसकी कहानी तलाशने के लिए जब फ्लैश बैक में जाता हूं तो चलचित्र की तरह दृश्य सामने आते चले जाते हैं। जैसे वह अपनी कहानी स्वयं ही सुना रही हो और दृश्यों को मेरे सामने से गुजार रही हो।

मैं देख रहा हूं कि वह कितने बड़े–बड़े बंगलों में रह चुकी थी, उसका पति दीपक बड़ा सरकारी अफसर जो था। इसलिए जहां भी ट्रांसफर होकर गया, बड़े बंगले और नौकर चाकर मिलते रहे लेकिन जब जिन्दगी के आखिरी दिनों को गुजारा तो उसे दस बाय दस का छोटा सा कमरा भी बड़ा लगने लगा था क्योंकि न तो कोई ख्वाहिश शेष बची थी और न ही कोई उमंग! धीरे धीरे सारे नाते–रिश्ते भी बेगाने से लगने लगे थे। कितनी हंस मुख, खुशमिजाज, वाचाल और मिलनसार थी वह लेकिन अपने अंतिम दिनों में उसको देखकर कोई कह ही नहीं सकता था कि यह वही कल्पना है जिसके चेहरे पर कभी कोई शिकन नहीं रहती थी। लेकिन क्या हुआ कि वह इतनी चिड़चिड़ी हो गई थी। बात–बात पर भड़क जाना और कोई यदि मिलने भी आता तो टाल देना या फिर उसके सामने गुमसुम बैठे रहना।

शरीर ने भी तो जवाब देना शुरू कर दिया था, बीमारियों ने भी घेर लिया था। आर्थराइटिस की समस्या कोई छोटी–मोटी समस्या तो थी नहीं और फिर मौसम की मार अलग इस ढलती उम्र में और फिर उसपर अकेलापन। सबसे ज्यादा तो अकेलापन ही इंसान को दीमक की तरह खा जाता है।

उसे देखकर सोच में पड़ गया था कि क्या यह वही कल्पना है जो एक समय दौड़–दौड़ कर सारे काम चुटकियों में यूं ही कर लिया करती थी। उसे फुर्सत में बैठना तो पसंद ही नहीं था। उसमें बिजली की सी फुर्ती थी। बचपन से ही उसे सक्रिय रहने की आदत सी हो गई थी। पांच भाई–बहनों में हालांकि वह दूसरे नम्बर पर थी लेकिन काम–काज के मामले में पहले नम्बर पर ही रहती थी।

अपने मां–बाबूजी की लाड़ली भी रही और इसीलिए बाबूजी के ऑफिस जाने के पहले ही टिफिन तैयार करवा देने का काम हो या छोटी बहनों के नाज–नखरे उठाते हुए उन्हें स्कूल भेजने का काम ,वह हमेशा तत्पर रहती थी, अपनी मां के काम में हाथ बंटाने के लिए। भाई–बहनों की गलतियों को छुपाने और उन्हें डांट से बचाने मे भी तो वह आगे रहती थी। हां, पढ़ने–लिखने में उसका मन ज्यादा नहीं लगता था लेकिन स्कूल की अन्य गतिविधियों में वह बढ़–चढ़कर हिस्सा लेती थी।

उसने बारहवीं की परीक्षा पास की ही थी कि उसके ब्याह की बात आ गई थी। रिश्ता भी ऐसे नामी परिवार से जहां ना करने की गुंजाइश ही नहीं समझी गई, हालांकि वह इतनी जल्दी शादी के पक्ष में नहीं थी। जब उसके रिश्ते की बात आई थी तो कह दिया गया था कि शादी शीघ्र से शीघ्र करना है। उसके बाबूजी ने तब कहा भी था कि शादी की तैयारी के लिए कुछ तो समय दीजिए तब वरपक्ष की ओर से कह दिया गया कि हमें दान–दहेज में कुछ नहीं चाहिए, बस बारातियों का स्वागत ठीक तरह से हो जाए। इसके बाद तो तैयारी करने के अलावा कोई रास्ता ही शेष न था। कच्ची उम्र में ही तो उसकी शादी हो गई थी।

वह अपने मायके में तो छोटे से किराए के मकान में रही थी लेकिन ससुराल में आलीशान मकान और नौकर–चाकर का सुख मिल गया। सास–ससुर का बहुत लाड़–प्यार मिला। हालांकि मायके के लोग भी किसी समय सम्पन्न थे,जमींदार–जागीरदार के खानदान से ताल्लुक रखते थे लेकिन समय के साथ सब बिकता चला गया, और लोगों ने जमीनों पर कब्जा कर लिया। परिजन नौकरी के चक्कर में पैतृक संपत्ति छोड़कर गांव से शहरों की ओर निकल गए। स्थिति यह आ गई कि किराए के मकान में गुजर–बसर करना पड़ा। शायद इसीलिए उसने अपने उस बुरे वक्त को भुलाया नहीं था। हां,बचपन से ही सक्रियता और घर–गृहस्थी के काम आगे रहकर करने की आदत के कारण वह हर किसी की चहेती भी हो गई थी। चाहे नाना परिवार हो या दादा परिवार, वह सबकी आंखों का तारा रही।उन दिनों स्कूलों में गर्मियों की दो माह की छुट्टियां लगती थीं। दोनों ही परिवार चाहते थे कि वह ज्यादा से ज्यादा उन लोगों के साथ रहे। सभी बच्चों में उसकी पूछ–परख ज्यादा थी। शादी के बाद भी तो प्रत्येक अवसर पर उसे बुलाया जाता था और वह किसी को मना भी नहीं कर पाती थी। इससे उसके दाम्पत्य जीवन पर भी प्रभाव पड़ने लगा था। दीपक भी तो नाराज हो जाते थे। न केवल मायके तरफ के रिश्तेदार बल्कि ससुराल पक्ष के रिश्तेदार भी उसी की पूछ–परख करते थे। उसके बार–बार मायके के रिश्तेदारों के यहां होने वाले कार्यक्रमों में ज्यादा दिनों के लिए बुलाए जाने की वजह से दीपक चिढ़कर बोलते भी थे कि मंगल कार्यक्रमों में तुम्हें अपने स्वार्थ के कारण बुलाया जाता है। तब उसे गुस्सा भी आता था और पलटकर वह जवाब भी दे देती थी कि तुम्हें क्या मालूम कि मेरे मायके और रिश्तेदारी में मेरी कितनी पूछ–परख है। तब दीपक कहते भी थे कि देखना जब तुम्हें उनकी जरूरत पड़ेगी, कोई काम नहीं आने वाला है,कोई तुम्हें समय नहीं देने वाला है क्योंकि किसी के पास समय ही नहीं होगा तुम्हारे लिए।

दीपक जबसे सरकारी नौकरी करने लगे थे, हमेशा निराशावादी बातें ही करते थे। यह उनका स्वभावगत दोष ही था या उनकी आदत में शुमार हो गया था। उनका मानना था कि हर कोई स्वार्थी है और अपना काम निकलवाता है जबकि दूसरी ओर वह पूरी तरह से आशावादी थी और सभी में अच्छाई ही पाती थी।

कभी दूसरों की कमियों की ओर उसका ध्यान ही नहीं जाता था क्योंकि उसका स्वयं का दृष्टिकोण सकारात्मक जो था।

लेकिन इंसान का समय और शरीर कब तक साथ दे सकता है। उसके शरीर ने भी धीरे धीरे जवाब देना शुरू कर दिया।

उसे उम्मीद थी कि जिस तरह से उसने अपने सास–ससुर और बुजुर्गों की सेवा की है, उसे भी ईश्वर ऐसा ही प्रतिफल देगा। वृद्धावस्था में उसे कोई काम नहीं करना पड़ेगा और बहू–बेटे पलकों पर बैठाकर रखेंगे। किन्तु धीरे धीरे उसे सब समझ में आने लगा था कि नहीं, वही गलत थी। उसकी अपेक्षाएं समयानुकूल नहीं थीं। दीपक जो कहते थे, आजकल की दुनिया ठीक वैसी ही है, स्वार्थी– कपटी! सब अपने बारे में सोचने वाले!

जब उसका शरीर टूट रहा होता, तब भी उसे सांत्वना भरे दो शब्द कहने वाला उसके पास कोई नहीं था। बेटे–बहू के पास तो जैसे समय ही नहीं था, वे अपनी नौकरी चाकरी से ही कहां फुर्सत पा रहे थे। उसकी देखभाल के लिए एक आया जरूर रख छोड़ी थी जो समय–समय पर आकर देख जाया करती थी। बेटे–बहू काम से लौटने के बाद कभी पांच–दस मिनट के लिए आ जाते थे और हालचाल पूछ लेते थे और कभी तो उन्हें इस बात की भी फुर्सत नहीं होती थी। रात–रात भर हाथ–पैरों में असहनीय दर्द रहता था, तब वह अपनी वेदना किसी को कह भी तो नहीं सकती थी क्योंकि अपनो का दर्द अपने ही समझ सकते थे लेकिन अपनों के पास इसके लिए समय ही कहां था! उस दौरान उसे वह समय भी याद आ जाता था जब वह अपनी नानी सास की उनकी बीमारी की अवस्था में शरीर की मालिश कर देती थी और हाथ–पैर दबा देती थी और बदले में वे यह आशीष देती थीं कि कल्पना तुझे भी ऐसी बहू मिलेगी जो तेरी बहुत सेवा करेगी। मायके में भी तो उसने अपनी दादी–नानी की बहुत सेवा की थी। सभी ने बहुत आशीष दिये थे। लेकिन उनके आशीर्वाद क्यों नहीं फले, यह विचार हमेशा ही उसके खयालों में आते रहते थे।

उसने एक बार यह भी बताया था कि जब दीपक जीवित थे तो उन्होंने बेटे के विवाह के लिए पढ़ी–लिखी बहू लाने का विचार रखा था। उनका कहना था कि बेटी–बहू दोनों ही अपने पैरों पर खड़ी रहे,यही ज्यादा ठीक है। घर गृहस्थी के कामों में अपनी जिन्दगी खपा दे, तब भी स्त्री को कहां यश मिल पाता है। शायद उसने भी यही सोचकर दीपक की बात का समर्थन किया था लेकिन जब वह स्वयं शारीरिक रूप से असमर्थ हो गई और उसका ध्यान रखने वाला कोई न रहा, न ही उससे बात करने के लिए किसी के पास समय था और न ही उसके दुख दर्द देखने–समझने की किसी के पास फुर्सत ही थी तब उसे यह सब बातें रह–रहकर याद आती थी। नाते–रिश्तेदारों ने भी दूरी बना ली थी तब उसके जेहन में यही सवाल आता था कि उसने लोगों की खुशी के लिए अपने स्वास्थ्य का भी ध्यान नहीं रखा, अपने परिवार से ज्यादा नाते–रिश्तेदारों को समय दिया तो क्या वही गलत थी जिसने स्वयं से ज्यादा परिजनों, समाज, नाते–रिश्तेदारों के लिए समय दिया और अपने आप को खपा दिया।

उसकी अपनी कहानी शायद यहीं समाप्त हो गई थी क्योंकि भविष्य के सपने तो अब थे भी नहीं। लेकिन मुझे लगा कि यह तो अधूरी कहानी है और अब पूरी भी नहीं होना है। सोचता हूं कि इस कहानी का अंत यहीं पर करना ठीक है एक अधूरेपन के साथ, ठीक उसी तरह से जैसे कल्पना की अपनी कहानी में अधूरापन था।

पत्नी को धोखा देकर गर्लफ्रेंड के साथ गया था इटली, वापस साथ लाया कोरोना

कोरोना वायरस ने दुनियाभर में सैकड़ों लोगों की जान ले ली है। ऐसे में इटली इससे सबसे अधिक प्रभावित हुआ है। इटली गया एक शख्स उस वक्त परेशानी में फंस गया जहां वह अपनी पत्नी को धोखा देकर अपनी गर्लफ्रेंड के साथ हॉलीडे मनाने इटली गया था। लेकिन कोरोना वायरस संक्रमण के बीच वो शख्स भी कोरोना की चपेट में आकर संक्रमित हो गया। मामला, ब्रिटेन का है। यहां एक बिजनेसमैन अपनी पत्नी से झूठ बोलकर इटली चला गया। उसने अपनी पत्नी से बोला कि वह बिजनेस ट्रिप पर ब्रिटेन में ही कहां जा रहा है। लेकिन जब वह ट्रिप से वापस लौटा तो वह कोरोना से संक्रमित हो गया। उसके बाद उसकी पत्नी ने उससे तो उसने बताया कि बिजनेस ट्रिक के दौरान ही वह कोरोना वायरस का शिकार हो गया। उसने अपने इटली के दौरे के बारे में पत्नी को कुछ भी नहीं बताया। ये घटना पिछले हफ्ते की बताई जा रही है। इस बिजनेसमैन का झूठ उस वक्त पकड़ा गया जब उसने डॉक्टरों को इटली जाने की बात स्वीकार कर ली और बताया कि वह वहीं पर कोरोना से संक्रमित हुआ है। हालांकि उसने डॉक्टरों को भी यह नहीं बताया कि उसके साथ उसकी गर्लफ्रेंड भी थी। असल में उसे यह डर सता रहा था कि उसने अपनी गर्लफ्रेंड की बात डॉक्टरों से बताई तो उसकी पत्नी को भी यह बात पता चल जाएगी।

फिलहाल इस शख्स की पत्नी को एहतियातन आइसोलेशन में रखा गया है। साथ ही यह पता लगाने की भी कोशिश की जा रही है कि वह इटली से लौटने के बाद किन-किन लोगों से मिला था। जिसके चलते कोई और तो कोरोना के संक्रमित नहीं हो गया। बता दें कि ब्रिटेन में कोरोना के अब तक आठ हज़ार से ज्यादा मामले सामने आए हैं और चार सौ से ज्यादा लोगों की जान गई है। ब्रिटेन में कोरोना को रोकने के लिए भारत की तरह ही तीन सप्ताह का लॉकडाउन किया गया है। ब्रिटेन के प्रधानमंत्री बोरिस जॉनसन ने लॉकडाउन की घोषणा की। साथ ही लोगों पर कड़े प्रतिबंध भी लगाए हैं। प्रधानमंत्री जॉनसन का कहना है कि सिर्फ जरूरी सामान खरीदने और मेडिकल सेवा के लिए ही लोग घर से बाहर निकल सकते हैं।





इस गांव में हुई चांदी की अनोखी बारिश

जरा सोचिए की आप सुबह उठे और बाहर चांदी की बारिश हो रही हो तो आप क्या करेंगे? जाहिर सी बात है आप चांदी को समेटने लगेंगे। दरअसल, ऐसी ही खबर बिहार के सीतामढ़ी से आ रही है। जहां के लोग जब सुबह सोकर उठे तब सड़कों पर चांदी की बूंदे बिखरी पड़ी हुई थी। लोगों में चांदी की बूंदों को बटोरने की होड़ लगी हुई थी। जिसके बाद बच्चे, बूढ़े, जवान समेत महिलाएं भी सड़क पर गिरे चांदी को जमा करने में जुट गए। इलाके के लोगों के लिए यह हैरत का विषय बना हुआ है। रिपोर्ट के मुताबिक, इस घटना को लेकर तरह-तरह ही कहानियां सामने आ रही है। कोई कह रहा है कि तस्कर चांदी से भरी बोरी लेकर इस रास्ते से गुजर रहा होगा, बोरी फटी होगी और सड़क पर चांदी की बूंदें बिखर गई होंगी। ये घटना नेपाल बॉर्डर के पास हुई, जिसकी वजह से तस्कर वाला एंगल सामने आया था। वहीं कई लोगों ने डेढ़ सौ ग्राम से आधा किलो तक चांदी के गिरे हुए दानों को उठा लिया। वहीं इस मामले में इलाके के ज्वैलर्स का कहना है कि चांदी के दानों को जांचने के बाद पता चला कि वो सबसे अच्छी किस्म की चांदी है। हालांकि इतनी मात्रा में चांदी की बुनिया आखिर सड़क पर आई कहां से इसको लेकर तमाम तरह के कयास लगाए जाने लगे। बहरहाल, सूचना पाकर सुरसंड पुलिस तहकीकात में जुट गई है।

महामारी के बीच, प्रकृति की झूठी खबरें

कोविड-19 के मामले बढ़ने, क्वारेंटीन के आदेश, और इस सप्ताह ट्विटर पर मेडिकल आपूर्ति की कमी के बारे में समाचारों के बीच, प्रकृति की कुछ अच्छी बातों की खबरें भी आ रही थी: स्वान और डॉलफ़िन वेनिस के नहरों के किनारे पर लौट आए। और हाथियों का एक समूह चीन के युन्नान में एक गांव से होकर निकल रहा था, जो मकई की शराब से नशे में चूर होकर चाय के बाग में सो गया। नोवेल कोरोनावायरस से पीड़ित देशों में वन्यजीवों की विजय की इन रिपोर्टों को सैकड़ों हजारों रीट्वीट मिले। वे इंस्टाग्राम और टिक टॉक पर वायरल हो गए। उन्होंने अखबारों की सुर्खियां बटोरीं। अगर महामारी में कुछ अच्छी बात होती, तो लोग कहते, प्रकृति वापस पनप रही है, जानवर मानवरहित दुनिया में घूम रहे हैं। लेकिन यह असली नहीं है।

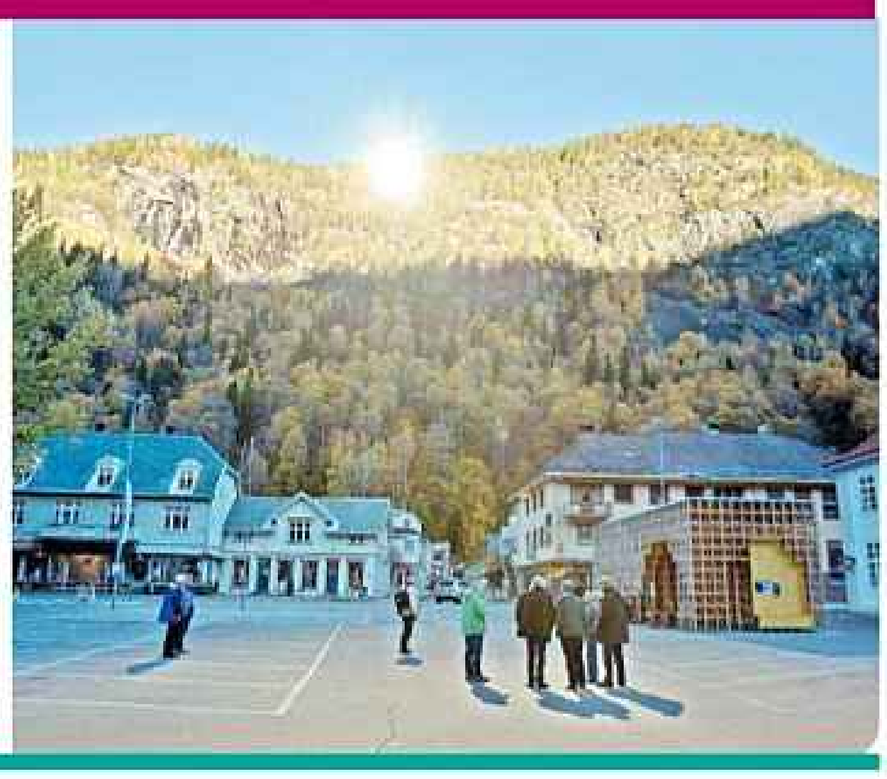


वायरल पोस्ट में दिखाए गए हंस नियमित रूप से ग्रेटर वेनिस महानगरीय क्षेत्र के एक छोटे से द्वीप बुरानो की नहरों में दिखाई देते हैं, जहां तस्वीरें ली गई थीं। 'वेनिस' डॉल्फ़िन को सैकड़ों मील दूर, भूमध्य सागर में सार्डिनिया के एक बंदरगाह पर फिल्माया गया था। किसी को भी यह पता नहीं चला है कि शराबी हाथी की तस्वीरें कहां से आई हैं, लेकिन एक चीनी समाचार रिपोर्ट ने इस वायरल पोस्ट को खारिज कर दिया: जबकि हाथी हाल ही में चीन के युन्नान प्रांत के एक गांव से आए थे, उनकी उपस्थिति सामान्य है।

ओहियो में कॉलेज ऑफ वोस्टर में मनोविज्ञान और पर्यावरण अध्ययन के प्रोफेसर सुसान क्लेटन कहते हैं, 'मुझे लगता है कि लोग वास्तव में विश्वास करते हैं कि प्रकृति के पास रिकवर करने की माकत है। लोगों को उम्मीद है कि, चाहे हमने कुछ भी किया हो, प्रकृति उससे ऊपर उठने के लिए पर्याप्त शक्तिशाली है।'

एक अंधेरे गांव को पहाड़ों पर मिरर लगाकर किया रोशन

सूर्य भले ही हमारे लिए ऊर्जा का एक स्रोत है लेकिन इसके बावजूद धरती पर कई ऐसी जगहें हैं जहां वर्ष में कुछ महीने ही बस सूरज की रोशनी मिलती है। जिसमें एक जगह है आर्कटिक सर्कल के उत्तर में स्थित नॉर्वे का टॉम्सो शहर, जहां हर वर्ष नवंबर से जनवरी तक तीन महीने तक सूरज नहीं दिखाई देता है। वहीं यदि आप इससे दक्षिण में चलेंगे को नॉर्वे का रजुकान गांव आता है, जहां छह महीने तक सूर्य की रोशनी देखने को नहीं मिलती है। ऐसे जगह पर लोग सदियों से रह रहे हैं। लेकिन विशेषज्ञों ने इस समस्या का हल कर दिया। तकनीती विशेषज्ञों ने इस मुश्किल को सन मिरर लगाकर हल किया है। सूर्य के प्रकाश की दिशा में पहाड़ों पर विशाल सन मिरर की शृंखला लगाई गई, जिससे सूर्य की किरणों परावर्तित होकर पहाड़ी की तलहटी में रोशनी की है। ये आइडिया एक सदी पहले यहीं के इंजीनियर सैम आइड का था। जिसे मार्टिन एंडरसन ने पूरा किया था। मार्टिन पहले शख्स थे जिन्हें रजुकान में सूर्य की रोशनी नहीं दिखने पर बेचैन हो गए थे। उन्होंने स्थानीय अधिकारियों की मदद से 8 लाख डॉलर की लागत से सन मिरर लगवाए थे। इससे पहले लोग केबल कार के जरिए सूरज की रोशनी देखने ऊपर जाते थे। हालांकि अब यहां दिन भर प्रकाश रहता है। यहा लगाया हुआ मिरर 538 वर्ग फुट के क्षेत्र में लगाए गए हैं, जो शहर के 2150 वर्ग फीट क्षेत्र को रोशन करता है। शेष इलाके में इसका उजाला मिल पाता है। ये जगह लोगों के देखने के लिए काफी दिलचस्प है। पर्यटन बढ़ने से यहां के लोगों को काफी फायदा होता है।





नामी गिरामी लोग जिन्हें लगा कोरोना वायरस

कोरोना वायरस से पूरी दुनिया परेशान हैं। आम लोगों के अलावा कई जानी मानी हस्तियां भी इसकी चपेट में आई हैं। डालते हैं एक नजर ऐसे ही लोगों पर।

बेगोना गोमेज

स्पेन की सरकार ने घोषणा की कि प्रधानमंत्री पेद्रो सांचेज की पत्नी बेगोना गोमेज नोवेल कोरोना वायरस के टेस्ट में पॉजिटिव पाई गई हैं। स्पेन के दो मंत्रियों में भी संक्रमण की पुष्टि हुई। हालांकि सभी की तबियत ठीक बताई गई है।

वसुंधरा को चिंता

इस पार्टी में शामिल रहीं राजस्थान की पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे सिंधिया और उनके सांसद बेटे दुष्यंत सिंह ने खुद को क्वारंटीन में रख लिया है। हालांकि इससे पहले दुष्यंत राष्ट्रपति भवन में आयोजित एक कार्यक्रम में शामिल हो चुके थे।

इदरीस एल्बा

हॉलीवुड के एक और स्टार इदरीस एल्बा भी उन सिलेब्रिटीज में शामिल हैं जो कोरोना की चपेट में आए। उन्होंने ट्वीट कर कहा कि उन्हें वैसे कोई दिक्कत नहीं हो रही है, लेकिन पॉजिटिव आने के बाद से वह खुद को अलग थलग रख रहे हैं। उन्होंने अपने प्रशंसकों से सभी अफवाहों से दूर रहने को कहा।



ईरानी मंत्री को कोरोना

ईरान में स्वास्थ्य उप मंत्री इराज हरीरची एक प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान पसीना पोंछते नजर आए। बाद में एक वीडियो संदेश में उन्होंने कहा कि उन्हें भी कोरोना संक्रमण हो गया है। इसके अलावा ईरानी संसद के 23 सदस्यों को भी यह संक्रमण लगा।

नदीन डोरिस

ब्रिटेन की स्वास्थ्य मंत्री और कंजरवेटिव सांसद नदीन डोरिस भी कोरोना वायरस की चपेट में हैं। इसके बाद उन्होंने खुद को घर तक सीमित कर लिया। लेकिन इससे पहले उन्होंने कई बैठकों में हिस्सा लिया था।



टॉम हैंक्स

हॉलीवुड स्टार टॉम हैंक्स और उनकी पत्नी, सिंगर और अभिनेत्री रीटा विल्सन को कोरोना के कारण एक हफ्ते तक अस्पताल में रहना पड़ा। इसके बाद वह घर पर क्वारंटीन में रहे। टॉम की बहन सैंड्रा हैंक्स बेनोटीन का कहना है कि अब वे अच्छे हो रहे हैं।

फ्रॉन्क रीस्टर

फ्रांस के संस्कृति मंत्री फ्रॉन्क रीस्टर भी कोरोना की चपेट में आने के बाद अपने घर तक सीमित हो गए। उन्होंने कई दिन देश की संसद नेशनल असेंबली के निचले सदन में बिताए, जहां कोरोना के पांच मामलों की पुष्टि हुई। रीस्टर के दफ्तर से जारी बयान में उनकी तबियत ठीक बताई गई है।

एनबीए में कोरोना

अमेरिका की नामी बास्केट बॉल टीम ऊटा जैज के दो बड़े सितारे रुडी गोबर्ट और डोनोवन मिचेल को भी यह वायरस लगा है। एनबीए की कई और टीमों के खिलाड़ी भी पॉजिटिव पाए गए हैं। ऐसे में, अमेरिका में इस लोकप्रिय खेल से जुड़ी गतिविधियां सीमित हो गई हैं।

कनिका कपूर

'बेबी डॉल' गाने से मशहूर हुई बॉलीवुड सिंगर कनिका कपूर कोविड-19 की चपेट में हैं। लंदन से लौटी कनिका पिछले दिनों लखनऊ की एक पार्टी में मौजूद थी, जहां कई वरिष्ठ नेता और सांसद मौजूद थे।



सोफी ग्रेगोआ ट्रुडो

कनाडा के प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रुडो की पत्नी सोफी ग्रेगोआ ट्रुडो ने लंदन दौरे से लौटने के बाद टेस्ट कराया तो वह पॉजिटिव पाई गईं। इसके बाद प्रधानमंत्री ट्रुडो ने भी खुद 14 दिन के लिए अलग थलग कर लिया। हालांकि वह पूरी तरह स्वस्थ थे।

भारतीय कारोबार पर कोरोना का असर

कोरोना वायरस के कारण दुनिया भर में लोग परेशान हैं, भारत सरकार कोरोना से निपटने के लिए कई कदम उठा रही हैं। वहीं कारोबार जगत की बात की जाए तो उसकी भी हालत ठीक नहीं है। एक नजर कोरोना का असर किन-किन क्षेत्रों पर हुआ है।

एविएशन

भारत में कोरोना वायरस का सबसे ज्यादा असर पर्यटन क्षेत्र पर पड़ा है। विदेशी पर्यटकों के लिए यही समय भारत आने के लिए अनुकूल है। लेकिन फ्लाइट्स रद्द होने के कारण लोग भारत नहीं आ पा रहे हैं जिस कारण बुकिंग रद्द हो रही हैं। एक रिपोर्ट के मुताबिक अब तक 15 हजार करोड़ रुपये के टिकट रद्द हो चुके हैं।

होटल

होटल कारोबार भी कोरोना वायरस की वजह से घटा है। एक अनुमान के मुताबिक होटल कारोबार 80 प्रतिशत तक घटा है। इस सेक्टर को अब तक 27,300 करोड़ से ज्यादा का नुकसान हुआ है।

मुर्गीपालन उद्योग

मुर्गीपालन उद्योग को भी संक्रमण की वजह से नुकसान हुआ है। कई शहरों में चिकन के खरीदार नहीं हैं। वहीं इस उद्योग को एक महीने में 4500 करोड़ का नुकसान हो चुका है।

सिनेमा उद्योग

संक्रमण को रोकने के लिए कई राज्यों में सिनेमा हॉल बंद कर दिए गए हैं। वहीं वायरस से बचाव के लिए शूटिंग रोक दी गई है। सिनेमा जगत को भी अब तक कई सौ करोड़ का नुकसान हो चुका है।

कंज्यूमर ड्यूरेबल

कंज्यूमर ड्यूरेबल को भी नुकसान झेलना पड़ रहा है। इस सेक्टर का कारोबार अब तक 15 फीसदी नीचे आ गया है।





शेयर बाजार

भारतीय शेयर बाजार भी कोरोना के प्रभाव से अछूता नहीं है। मंदी की आशंका के कारण विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकों ने मार्च में अब तक भारतीय पूंजी बाजार से शुद्ध रूप से 37,976 करोड़ रुपये की निकासी की है।

पेट्रोलियम सेक्टर

पेट्रोलियम योजना और विश्लेषण प्रकोष्ठ की रिपोर्ट के मुताबिक जनवरी में पेट्रोल की मांग में पिछले साल के मुकाबले सिर्फ 3.5 फीसदी का इजाफा हुआ जबकि डीजल की मांग पिछले साल जनवरी के मुकाबले करीब 2 फीसदी कम हुई है। पेट्रोलियम कंपनियों की चिंता इस कारण बढ़ गई है।

कपड़ा उद्योग

कपड़ा उद्योग भी कोरोना वायरस की चपेट में आ गया है। कारोबार 35 फीसदी तक घट चुका है। कपड़ा उद्योग को करीब 12,000 करोड़ रुपये के नुकसान का अनुमान है।

epaper.starsamachar.com

स्टाइलिंग के चक्कर में न करें ऐसी गलतियां



स्टाइलिश दिखना हर किसी को अच्छा लगता है, लेकिन बात जब कपड़ों के सिलेक्शन की आती है तो अक्सर लोग ट्रेंडी क्लोथ खरीदना पसंद करते हैं, लेकिन वो इस बात पर ध्यान नहीं देते कि क्या वाकई वो कपड़े उन पर अच्छे लगेंगे या नहीं। खासतौर पर बात जब दुबले लड़कों की ड्रेसिंग की हो तो उन्हें इस बारे में और भी ज्यादा ध्यान देना चाहिए। क्योंकि गलत पैटर्न के कपड़े उनके कॉन्फिडेंस को कम कर सकते हैं। इसलिए ऐसे लड़कों को कपड़े खरीदते समय कुछ बातों का ध्यान जरूर रखना चाहिए।

रंगों के साथ करें मिक्स एंड मैच

कपड़ों का चुनाव करते समय उनके रंग काफी मायने रखते हैं। क्योंकि इसी के जरिए आप दूसरों से अलग दिखते हैं। स्टाइलिस्ट के मुताबिक गहरे रंग के कपड़े / ब्लैक कलर के आउटफिट पहनने से बॉडी टोन्ड लगती है। इसलिए पतले लड़कों को डार्क कलर का चुनाव करने से बचना चाहिए। स्लिम लड़कों को रंगों को मिक्स एंड मैच करके पहनना चाहिए। जैसे- लाइट कलर की शर्ट या टी-शर्ट के साथ डार्क कलर की पैंट या जींस। इससे आपका अपर और लोअर पोर्शन बैलेंस दिखेगा। लाइट कलर के कपड़े पहनने से आपके मसल्स कट भी दिखेंगे।

बोल्ड पैटर्न का करें इस्तेमाल

कपड़े तभी स्टाइलिश लगते हैं जब उनका पैटर्न कुछ अलग हो। इसलिए पतले लड़कों को हमेशा बोल्ड पैटर्न वाले कपड़े पहनने चाहिए। इससे उनका स्लिम बॉडी स्ट्रक्चर काफी कुछ कवर हो जाएगा। वैसे तो मार्केट में कई तरह के पैटर्न अवेलेबल हैं, लेकिन दुबले लड़कों पर जो सबसे ज्यादा सूटेबल लगते हैं वो हैं, चेकर पैटर्न, डॉटेड, थ्री डी इफेक्ट्स और ग्राफ चेक्स। अगर इन पैटर्न में दो कलर को मैच किया गया हो तो ये आपके लुक को ज्यादा निखार सकता है।

फिटिंग न करें अनदेखा

ज्यादातर लड़के सोचते हैं कि दुबलापन छुपाने के लिए ओवर साइज ड्रेस पहनना अच्छा होगा। अगर आप भी ऐसा ही सोचते हैं तो अपना माइंड सेट चेंज करिए। क्योंकि फिजीक चाहे कैसा भी हो, लेकिन कपड़े फिटिंग के पहनने पर ही अच्छे दिखते हैं। क्योंकि खुद की नाप से ज्यादा बड़े कपड़े पहनने से ऐसा लगेगा जैसे हैंगर में किसी ने बड़ा-सा कपड़ा टांग दिया हो। इसलिए अपने दुबलेपन को छुपाने के लिए कपड़ों की फिटिंग पर ध्यान दें। पतले लड़के स्किनी जींस पहनें, इससे उनके पैरों को शेप इनहेंस होगा, लेकिन उन्हें सुपर स्किनी जींस पहनना अवाइड करना चाहिए। क्योंकि इससे उनके बोन्स दिखेंगे। ठीक ऐसे ही शर्ट या टी-शर्ट पहनते समय रेगुलर फिटिंग वाले कपड़े पहने। बॉडी से एकदम चिपके हुए कपड़ों को पहनने से बचें।

लेयर्स से बनें स्टाइलिश

पतले लड़कों को कपड़े खरीदते समय सिंपल या सोबर क्लोथ की जगह थोड़े स्टाइलिश दिखने वाले आउटफिट लेने चाहिए। खासतौर पर लेयर्स वाले कपड़े। चूंकि इनमें फैब्रिक की कई परतें होती हैं इसलिए ये बॉडी को मसक्यूलर दिखाते हैं। आप चाहे तो फनल नेक और चाइनीज कॉलर वाली टी-शर्ट ले सकते हैं। इसके अलावा आप शर्ट के ऊपर हाफ टी-शर्ट पहनकर इसे स्टाइलिश बना सकते हैं। इसके अलावा शर्ट के साथ वेस्ट कोट पहन सकते हैं। इससे डबल लेयर बनेगी। ऐसे ही आप कपड़ों को मिक्स एंड मैच करके पहनें। हालांकि ज्यादा लॉग कोट कैरी न करें। इससे आपका स्ट्रक्चर खराब दिखेगा।

स्टाइलिश नेक से बनेगी बात

ज्यादातर चौड़े चेस्ट या बॉडी रखने वाले लड़के ब्रॉड कॉलर या वी-नेक टी शर्ट पहनना पसंद करते हैं। इससे उनका लुक जबरदस्त लगता है। वहीं बात जब पतले लड़कों की हो तो उन्हें इस तरह के नेक पैटर्न कभी नहीं पहनने चाहिए। वी-नेक वाले टी-शर्ट में उनके कॉलर बोन्स दिख सकते हैं। इसलिए उन्हें गले की ऐसी डिजाइन वाले कपड़े लेने चाहिए जो थोड़े लेयर में हो। इससे उनकी पतली गर्दन थोड़ा छिप जाएगी। स्लिम लड़कों के लिए जिप नेक, स्टैंड अप कॉलर्स, शॉल कॉलर्स और फनल नेक बेस्ट विकल्प होते हैं। इन नेक पैटर्न्स में कई परतें होने की वजह से ये पहनने पर स्टाइलिश दिखते हैं। साथ ही इससे नेक का शेप भी पता नहीं लगता।



फैब्रिक हो सटीक

कोई भी शख्स स्टाइलिश तभी दिख सकता है जब कपड़े का मैटेरियल अच्छा हो। क्योंकि कपड़े महज आपको स्टाइलिश ही नहीं बनाते हैं, बल्कि ये आपकी पर्सनैलिटी को भी दिखाते हैं। आपने देखा होगा कि नेता ज्यादातर खादी या कॉटन फैब्रिक के कपड़े पहनते हैं। वहीं ज्यादातर एक्टर-एक्ट्रेस डेनिम या लेनिन के बने हुए कपड़े पहनते हैं। इसी तरह दुबले लड़कों को भी फैब्रिक का खास ध्यान रखना चाहिए। ऐसे लड़कों की बॉडी में फैट काफी कम होता है। इसलिए उन्हें ऐसा मैटेरियल चूज करने से बचना चाहिए जो उनकी बॉडी को सुपर स्किनी दिखाए। स्टाइलिस्ट के मुताबिक एक्स्ट्रा स्लिम लड़कों को ट्वीड, फ्लैनल, डेनिम, ग्लेन चेक, निटेड जैसे फैब्रिक वाले कपड़े पहनने चाहिए। क्योंकि इनका टेक्सचर थोड़ा मोटा होता है, इससे बॉडी बल्की दिखेगी।



कोरोनावायरस और पानी का महत्व



नोवेल कोरोनो वायरस बीमारी (कोविड-19) हमारी अर्थव्यवस्था को बुरी तरह प्रभावित कर रहा है। ऐसे में, यह समझने की जरूरत है कि सब के लिए स्वच्छ और सुलभ तरीके से पानी की उपलब्धता कितना महत्वपूर्ण है।

हाथ धोना ज़रूरी, लेकिन पानी का क्या?

इस महामारी से बचने का एकमात्र अचूक उपाय यही है कि हम लगातार अपने हाथों को हर बार 20 सेकंड तक धोएं। यानी, साफ पानी रोगों के रोकथाम के लिए दुनिया का सबसे महत्वपूर्ण उपाय है। ऐसे में, नोवेल कोरोनो वायरस जैसे वैश्विक दुश्मन को हराने में पानी की उपलब्धता एक महत्वपूर्ण निर्धारक होगी। हममें से अधिकांश इस बात से निश्चिंत हो सकते है कि हम अपने नल से पानी लेते हैं। अगर पानी साफ नहीं है, तो हम बोतलबंद पानी का विकल्प चुन लेते है। लेकिन हम दो चीजें भूल जाते हैं:

पहला, जो पानी हम खरीदते हैं, वह भी सार्वजनिक स्रोतों से ही आता है, यानी ज्यादातर वे भूजल होते है।

दूसरा, हम ये सोच कर बोतलबंद पानी खरीदते है कि ये 'सुरक्षित' है, लेकिन पानी का इस्तेमाल करने के बाद वह गंदे पानी में बदल जाता है। यानी, जितना अधिक पानी हम उपयोग करते हैं, उतना अधिक सीवेज (गन्दा पानी) हम उत्पन्न करते हैं। यदि इस सीवेज का उपचार नहीं होता है, तो यह प्रदूषण और जलजमाव की समस्या पैदा करेगा। यानी, हम एक बार फिर गंदे पानी की ओर लौटते है।

महामारी के समय में जल संकट

जल संकट एक स्वास्थ्य संकट है। कोरोना वायरस का उदाहरण देखे। 20 सेकंड हाथ धो कर वायरस को मारने की सलाह दी जाती है। इसका अर्थ होगा कि अगर चलते नल से पानी लेते हैं, तो हर बार हाथ धोने पर लगभग 1.5-2 लीटर पानी खर्च करना। इस तरह, बार-बार हाथ धोने का मतलब होगा कि हमें प्रति व्यक्ति 15-20 लीटर पानी की आवश्यकता है। यानी, पांच सदस्य वाले घर को केवल हाथ धोने के लिए 100 लीटर पानी की आवश्यकता होगी। यदि आप हाथ को साबुन से धोते वक्त नल बन्द रखते है, तब भी पानी की खपत अधिक होगी। हमारे सामने ये चुनौती है कि भारत समेत उभरती हुई दुनिया के बड़ी जनसंख्या की पानी तक पहुंच नहीं है। फिर वे इस वायरस से कैसे मुक्त होंगे? इसलिए बेहतर होगा कि नल से किसी बर्तन में पानी लें, और बाकी पानी को अगली बार के लिए बचाइये।

क्या सिखाती है महामारी

- महामारी हमें सिखाती है कि हम इस श्रृंखला में उतने ही कमजोर है, जितने दुनिया के सबसे कमजोर लोग। यानी, हमें यह सुनिश्चित करने की आवश्यकता है कि हर किसी के पास सार्वजनिक स्वास्थ्य तक पहुंच हो, ताकि कोई भी इस वायरस का वाहक न बन सके। पानी के साथ भी ऐसा ही है। यदि लोगों के पास साफ पानी नहीं है, तो वे बीमारी को फैलने से नहीं रोक पाएंगे।
- अच्छी खबर यह है कि हमें पता है कि क्या किया जाना चाहिए। पानी का फिर से उपयोग किया जा सकता है। हम यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि हम जल के हर बूंद को सहेजे, स्थानीय जल भंडारण प्रणालियों का निर्माण करें, कम पानी की जरूरत वाली फसलें खाएं और अपशिष्ट जल की हर बूंद को रीसायकल कर इस्तेमाल करें।
- वर्तमान प्रणाली इतनी महंगी है कि साफ पानी कुछ घरों तक ही पहुंचाया जा सकता है। अधिक दूर से पानी लाने के लिए जितनी लंबी पाइप लाइन होगी, आपूर्ति की लागत उतनी ही अधिक होगी। हमारे शहरों में बड़ी संख्या में लोगों को पाइप से जलापूर्ति की सुविधा नहीं मिलती है। वे टैंकरों से पानी लेते हैं या पीने के पानी और अन्य जरूरतों के लिए गंदे और अविश्वसनीय जल स्रोतों पर निर्भर करते हैं। इससे उनके स्वास्थ्य पर बुरा असर होता है।
- पानी की आपूर्ति की लागत जितनी अधिक होगी, पानी को सीवेज से वापस ला कर उसका उपचार करने पर खर्च कम होता जाएगा। ज्यादा पानी या ज्यादा सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट की योजना बनाना हमारे लिए पर्याप्त नहीं है। हमें आपूर्ति प्रणाली को फिर से डिजाइन करने की आवश्यकता है, ताकि हम स्थानीय जल संचयन प्रणालियों में निवेश करके पाइपलाइन लंबाई में कटौती कर सकें। हमें पानी के उपयोग को कम करके मांग को फिर से डिजाइन करना होगा, ताकि हम पानी की बर्बादी कम कर सकें। हमें सीवेज प्रबंधन को फिर से डिजाइन करने की जरूरत है।
- कुल मिला कर बात ये है कि साफ पानी सभी के लिए सस्ती और सुलभ होनी चाहिए वर्ना यह किसी के लिए भी दीर्घकालिक तौर पर उपलब्ध नहीं रहेगी।

epaper.starsamachar.com

वैदिक ज्योतिष



ज्योतिषाचार्य पं. नारायणशंकर नाथूराम व्यास
कोतवाली बाजार जबलपुर म.प्र. मो. 09826621998

दिनांकः 22 मार्च से 28 मार्च 2020 तक

साप्ताहिक ग्रहस्थिति

इस सप्ताह सूर्य मीन राशि में, मंगल धनु राशि में ता. 22 को 2/25 दिन से मकर राशि में, बुध कुम्भ राशि में, गुरू धनु राशि में, शुक्र मेष राशि में ता. 28 को 8/25 दिन से वृषभ राशि में, शनि मकर राशि में, राहु मिथुन राशि में, केतु धनु राशि में और चन्द्रमा कुम्भ, मीन, मेष, और वृषभ राशि में संचरण करता है।

ग्रहयोगों का प्रभाव

शनि और मंगल मकर राशि में संयोग कर रहे हैं, आगे गुरू भी मकर राशि में आ रहा है, जिसके योग से देश में राजनैतिक परेशानियां बढ़ेंगी, कुछ प्रान्तों में राजनैतिक साम्प्रदायिक तनाव और अशांति हो सकती है। प्राकृतिक आपदा और अग्निकाण्ड से भी नुकसान की सम्भावना है। कहीं कहीं मंदी बनेगी, रूई, सोना, चांदी, तांबा, गुड, खांड, घी, तेल, तिलहन, ऊन में तेजी होगी। अनाज और दालवाना में भी तेजी सम्भव है। ता0 28 मार्च को शुक्र वृषभ राशि में आकर स्वगृही होगा, जिसका प्रभाव कपास, गुड, खांड, चांदी, तिलहन के बाजार में देखा जायेगा, शुक्र मंदी का सूचक है। राजस्थान, महाराष्ट्र, पांडुचेरी के कुछ भागों में वायु वेग के साथ वर्षा सम्भव है।

पर्व/व्रत/त्यौहार

22 मार्च- शिव चर्तुदशी व्रत, मां हिंगलाज जयंती, 23 मार्च- श्राद्ध अमावस्या, 24 मार्च- स्नानदान अमावस्या, 25 मार्च- बैठकी, नवरात्रारम्भ, चेटीचंद, संत झूलेलाल जयंती, गुडी पडवा, 26 मार्च को- सिंघारा दोज, 27 मार्च- गणगौर तीज व्रत, सौभाग्य सुंदरी तीज, अरूंधती व्रत, 28 मार्च- वैनायकी गणेश चतुर्थी व्रत।



सोच समझकर ही आप आगे बढ़ना चाहेंगे, आप पूरे होश एवं जोश के साथ कार्य में जुट जायेंगे, भविष्य में लाभ की योजनाओं की शुरूआत हो सकती है अनुसंधान एवं कला के क्षेत्र में सफलता मिलेगी। उच्च पदस्थ लोगों के साथ सामूहिक कार्य में भाग लेंगे, जीवनसाथी और बच्चों को आपसे अपेक्षायें बढ़ेंगीं।



अपने मन में चल रहे अन्तर्द्वंद को दूर कर कार्य में जुट जाने का समय है, वरिष्ठों का सहयोग बना रहेगा, आप अपने स्वास्थ्य और सामाजिक स्थिति पर अत्याधिक खर्च करेंगे, व्यवसाय में किसी करीबी मित्र को साझेदार बना सकते हैं, सप्ताह के अंतिम समय स्वास्थ्य में गिरावट संभावना है, श्रम उतना ही करें, जितना आपका शरीर साथ दे।



व्यापार यात्रा और धार्मिक कार्यों में आपकी रूचि बढ़ेगी, सफलता की ओर कदम बढ़ेगे, कार्य पूर्ण करने में सहयोगी का रवैया आपके प्रति सहयोगात्मक रहेगा, जान पहचान का दायरा बढ़ेगा, आप किसी बड़ी योजना में शामिल हो सकते हैं, परन्तु यह आपकी कार्यक्षमता के अनुकूल नहीं होगा, आपको कड़ी मेहनत और योजनाबद्ध तरीके से सफलता मिलेगी।



सप्ताह आपका काफी उतार चढ़ाव वाला रहेगा, कार्य की व्यस्तता रहेगी, अधिकारियों से तालमेल बनाकर आगे बढ़े। सामाजिक क्षेत्र में सक्रिता बढ़ेगी, व्यापार में कुछ नये साझेदारों को शामिल कर सकते हैं, किसी करीबी मित्र या रिश्तेदार का सहयोग मिलेगा, सप्ताह के अन्त में अति विश्वास आपको संकट में डाल सकता है।



सामाजिक कार्यों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेंगे, जिस कार्य में हाथ डालेंगे, सफलता मिलेगी, वित्तीय स्थिति पहले से बेहतर होगी, परन्त आप अवसरों को गंवा सकते हैं, करियर और सामाजिक स्थिति में सुधार होगा, नये वाहन की योजना बन सकती है, सप्ताहान्त में सोच समझकर और कार्यक्षमता के अनुरूप कार्य होगा, घरेलू वातावरण खुशनुमा रहेगा, मनोरंजक यात्रा होगी।



इस सप्ताह अपनों के व्यवहार से खिन्नता हो सकती है, घरेलू मामलों में विपरीत स्थिति का सामना करना पड़ेगा, सप्ताह के प्रारंभ में महत्व के कार्य करने की बजाय, रोजमर्रा की दिनचर्या ही निभाने का प्रयास करें, व्यवसाय में आप किसी अपरिचित पर अत्याधिक विश्वास न करें, स्वास्थ्य नरम गरम रहेगा, आप बच्चों के लिये कुछ हद तक परेशान रह सकते हैं।



कार्यस्थल पर आपकी योग्यता और कार्य के उचित मान सम्मान मिलेगा, अपनी बात मनवाने के लिये संघर्ष करना पड़ेगा, यह सप्ताह करियर की दृष्टि से मनोवांछित साबित होगा। आर्थिक स्थिति पहले से बेहतर होगी, मानसिक असंतुलन किसी प्रकार का कष्ट अथवा घरेलू परेशानी से बचें। दाम्पत्य जीवन में सुख समृद्धि का भाव कायम रहेगा। कारोबार में ईमानदारी से ध्यान दें।



व्यापारिक और करियर की दृष्टि से समय महत्वपूर्ण रहेगा, विद्यार्थी पढ़ाई के साथ प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी में व्यस्त रहेंगे, बच्चों की भावनाओं का ध्यान रखें, सप्ताह के मध्य महत्वपूर्ण निर्णय लेना पड़ेगा, व्यवसाय के क्षेत्र में विरोधियों से सतर्क रहें, किसी करीबी मित्र के साथ दूर दराज की यात्रा पर जा सकते हैं, पुराना पैसा मिलने का योग है।



प्रगति की दिशा में आगे बढ़ेंगे, अपनी योग्यता और सामर्थ्य का उपयोग सफलता पाने के लिये करेंगे, आपके व्यवहार और सोच में व्यापक बदलाव आ सकता है, जमीन जायजाद की खरीद बिक्री और ऋण के लेनदेन से लाभ होगा, राजनेता अपने हित की रक्षा के लिये प्रयास करेंगे, जीवनसाथी का स्वास्थ्य बिगड़ सकता है, गुमी वस्तु मिलने का योग है।



कार्यक्षेत्र में करियर में बड़ी सफलता मिलेगी, जिससे हर क्षेत्र में आप अपने को खास और विशिष्ट स्थिति में पायेंगे, व्यवसायिक साझेदारों से सावधानी रखें, महत्वपूर्ण निर्णय होंगे, जीवनसाथी का सहयोग कार्यक्षेत्र में नई संभावना देता है, नई सोच व कार्यशैली लाभकारी सिद्ध होगी, मांगलिक कार्यो पर विचार होगा।



अच्छी तरह सोच विचार कर ही अपनी प्राथमिकतायें तय करेंगे, परस्पर विचारों का आदान प्रदान करने से अच्छी बात बन सकती है, अतिरिक्त जिम्मेदारियों का बोझ उठाना पड़ेगा, विशिष्टजनों से प्रशंसा मिलेगी, भूमि और घर खरीद बिक्री फायदेमंद रहेगी, सामाजिक सक्रियता बढ़ेगी, व्यापार एवं राजकीय वजह से की गई यात्रा में बेहतर परिणाम मिलेंगे।



साझेदारियों के साथ व्यक्तिगत संबंध भी मजबूत होंगे, काननी मामले में प्रापर्टी संबंधी विवाद आसानी से सलझ सकते हैं, जान पहचान का दायरा बढ़ेगा, नौकरी पेशा लोगों की पदोन्नति संभव है, कार्यक्षेत्र में आप संतुष्ट रहेंगे, अपने स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दें, घर परिवार में मांगलिक कार्य की योजना बनेगी, बुजुर्गों के स्वास्थ्य पर ध्यान दें।

संसार का मेला

पिता की उंगली पकड़ कर मेले में घूमते हुए वह बालक तरह-तरह की चीजों, खिलौनों से सजी दुकानों की चमक-दमक देखकर खुशी से फूला नहीं समा रहा था। तभी भीड़ का एक रेला आया और बालक से पिता की उंगली छूट गई। बालक घबरा कर रोता हुआ मेले में अपने पिता को ढूंढने की कोशिश कर रहा था। पिता की उंगली छूटने मात्र से वह दुखी हो रहा था। मेले की रौनक और साज सामान जिन्हें देख वह पहले खुश हो रहा था, अब अच्छे नहीं लग रहे थे।

संसार के मेले में हमारी स्थिति भी ऐसी ही है। संपूर्ण वैभव होते हुए भी यदि धर्म की पकड़ छूट गई, परमपिता परमात्मा से अलग हो गए तो सब कुछ होते भी आनंद अनुभव नहीं कर सकते। धर्म का आलंबन रहने से वही वैभव जो सुख का कारण बना हुआ था धर्म से च्युत हो जाने पर सुखाभास नहीं देता। शाश्वत सुखानंद के लिए धर्म का आश्रय लेकर आत्मचिंतन अनिवार्य है। यदि समाज से धर्म को निकाल दिया जाए तो समाज धर्म से विमुख होकर अर्थहीन एवं अस्तित्वहीन हो जाएगा। मनुष्य की शारीरिक भूख मिटाने के लिए तो भौतिक पदार्थों का सेवन काफी है, परंतु मानव की अंतस् की भूख मिटाने के लिए आदिकाल से ही धर्म आगे आया है।

धर्म की जीवन में सकारात्मक भूमिका है। धर्म ही मनुष्य को मनुष्य बनाता है। हमारी नकारात्मक प्रवृत्तियों पर रोक लगा कर हमें दूसरों के प्रति संवेदनशील बनाता है। धर्म ना हो तो जीवन सुविधापूर्ण भरण-पोषण, व्यापार-व्यवसाय तक सीमित हो मात्र एक जरूरत बन कर रह जाएगा, जबकि वास्तविक जीवन केवल जरूरत के अतिरिक्त बहुत कुछ और भी है। जरूरत के पार ही तो है जीवन का मधुरिम काव्य। जिसका जीवन केवल जरूरतों का जोड़ है उसने जीवन को जाना ही नहीं। कुछ तो जीवन में ऐसा हो जो जरूरत के बाहर है। जिसके करने की कोई जरूरत तो नहीं है, फिर भी हम करें तो उससे आत्मिक-सुख की अनुभूति हो। क्योंकि ठीक इसी अनुभूति के माध्यम से धर्म-मार्ग से हो कर हमारा परमात्मा से संबंध जुड़ता है।

भूख मिटाने के लिए गेहूं जरूरी है, फिर गुलाब की क्या जरूरत है? जीना है तो रोजी-रोटी जरूरी है लेकिन जीवन में गेहूं ही गेहूं हो और गुलाब न हो तो ठीक चलेगा क्या? रोटी-रोजी तक ही सीमित हो गए तो जीवन के भीतर सुवास कहां से आएगी, सौंदर्य कैसे पैदा होगा? वैसे आज की सोच के हिसाब से जरूरत तो धर्म की भी नहीं, परमात्मा की भी नहीं है। इन दोनों के बिना काम ज्यादा सुविधा से चलता है। क्योंकि फिर बेईमानी करो, चोरी करो तो कोई अड़चन नहीं, झूठ बोलो तो कोई भय नहीं। हमारे पास होगा केवल सांसारिक सुविधाओं का आडंबर। बचेगी केवल धन-आभूषण से भरी तिजोरी, बैंक में जमा पूंजी। उनमें वृद्धि करने की चिंता।

यह सब होते हुए भी फूल और उसकी सुगंध तो नहीं मिलेगी हमें, न हम मीरा की भक्ति से अभिभूत होंगे। राधा-कृष्ण की सरसता, परस्पर स्नेह की पवित्रता से वंचित हो जाएंगे हम। सीता के समर्पण को कैसे आत्मसात करेंगे? महावीर और गौतम का त्याग, राम की मर्यादा, कृष्ण के जीवन-सार के बिना जीवन को जीना कह सकेंगे? नहीं न। इसीलिए संसारिक उपलब्धियों के साथ-साथ परमात्मा और धर्म की उंगली के जरिए उनका सान्निध्य महसूस करते रहना भी नितांत जरूरी है।

बूझो तो जाने

घोड़ा दौड़ा पटरी पर,
फिर उड़ जायेगा ऊपर,
बादल के प्यारे घर में,
दूर हवा में अंदर में।

आई गर्मी, आया मैं
बच्चों के मन भाया मैं,
गुठली चुसो या फेकों,
लाल सुनहरा आया मैं।

सिर पर जिसके कलगी लाल,
हरी सुनहरी दुम,
कुकड़ के करने वाला,
बोलो क्या कहते हो तुम?

डिब्बे पे डिब्बा,
डिब्बा का गांव
चलती फिरती बस्ती,
लोहे के पांव।

बूझो भैया एक पहेली,
जा काटो तो नई नवेली।

जान बेयर्ड ने मुझे बनाया,
दुनिया ने मुझे अपनाया,
गीत, खेल व फिल्म दिखाऊं
सबका मैं मन बहलाऊं।

हरा हूं पर पत्ता नहीं,
नकलची हूं पर बन्दर नहीं,
बूझो तो मेरा नाम सही।

कद के छोटे कर्म के हीन,
बीन-बजाने के शौकीन?

रोज शाम को आती हूं मैं
रोज सवेरे जाती हूं,
नींद न मुझको कभी समझना,
यद्यपि तुम्हे सुलाती हूं।

एक खेत में ऐसा हुआ,
आधा बगुला आधा सुआ।

उत्तर : हवाई जहाज, आम, मुर्गा, रेल, पेन्सिल, टेलीविजन, तोता, मछर, रात, मूली, कमल

प्रेरक कथा

राम का नया स्कूल

राम एक नवी कक्षा का विद्यार्थी है और हमेशा से पढ़ने लिखने में बहुत ही अच्छे दिमाग का रहा है। आठवी कक्षा तक उसकी अटेंडेंस हमेशा पूरी रहती थी और उसकी पिछली कक्षा आठवीं में तो उसकी अटेंडेंस लगभग 97 प्रतिशत थी। इससे उसकी टीचर भी उससे बहुत खुश रहते थे। हमेशा पढ़ाई में अव्वल रहने वाला राम हमेशा बहुत अच्छे नंबरों से पास होता था। इस साल नौवीं कक्षा में उसके माता-पिता ने उसका एडमिशन दूसरे स्कूल में करा दिया। क्योंकि उसका पिछला स्कूल आठवीं कक्षा तक ही था। नवी कक्षा में एक नया स्कूल,एक नया माहौल सब कुछ बदल गया था। राम को भी अपनी नई किताबों के साथ नए स्कूल में जाना बहुत ही उत्साहवर्धक लग रहा था।



राम के मां बाप भी बहुत खुश थे। राम ने एक बार फिर अपनी पढ़ाई पूरे ध्यान से करनी शुरू कर दी। नये स्कूल में राम नए-नए मित्र बने।टीचर भी सारे नए थे लगभग 2 महीने की कक्षा के बाद राम का स्कूल जाना कुछ कम सा हो गया और 90 प्रतिशत से ऊपर हाजिरी रखने वाला राम धीरे-धीरे स्कूल बहुत ही कम जाने लगा। राम के माता पिता ने शुरू-शुरू में यह बात ध्यान नहीं दी लेकिन धीरे-धीरे उन्हें लगने लगा कि पता नहीं क्यों राम स्कूल जाने से बचने लगा है। राम पढ़ने लिखने में तो बहुत ही उत्तम बच्चा था।किंतु अपने मन की बातों को अपने मां-बाप के साथ शेयर नहीं कर पाता था। ना जाने राम के दिमाग में क्या चल रहा था लेकिन उसने स्कूल आना-जाना बहुत कम कर दिया था।

आखिर एक महीने बाद राम के पीटीएम का समय आ गया। राम के पिता राम की क्लास टीचर से मिलने पहुंचे। तब क्लास टीचर ने राम के पिता को बताया कि राम कक्षा से बहुत ज्यादा गायब रहने लगा है। स्कूल में आता है तो खोया-खोया सा रहता है। आप उससे जानने की कोशिश करें कि वह पढ़ाई में इतना क्यों पिछड़ता जा रहा है। राम के पिता भारी मन के साथ क्लास टीचर के पास से उठे और धीरे-धीरे अपने घर की तरफ जाने लगे। घर जाकर बड़ी ही समझदारी से राम के पिता ने राम से पूछा बेटा क्या हुआ, क्या तुम्हारा मन पढ़ाई में नहीं लग रहा है। राम कुछ देर तो चुप रहा लेकिन कुछ देर बाद राम की आंखों में आंसू आने लगे। अचानक राम को रोता देखकर राम के पिता का मन दुखी हो गया। उन्होंने पूछा बेटा बताओ मुझे क्या बात है। क्या किसी ने कुछ कहा है। तब राम ने अपने पिता को बहुत डरते हुए बताया पापा इस स्कूल में सब बड़े-बड़े घरों के बच्चे आते हैं जो बहुत अच्छे पैसे वाले हैं। कुछ अपनी गाड़ियों से आते हैं और कुछ अपनी अपनी बाइक से आते हैं। लेकिन मैं अक्सर या तो पैदल जाता हूं या आप मुझे छोड़ देते हो।

यह सब देख कर मुझे कक्षा के सभी विद्यार्थी गरीब-गरीब कहकर चिढ़ाते हैं। राम के पिता को समझते कुछ भी देर न लगी कि राम अपनी गरीबी को लेकर परेशान है। तब राम के पिता ने उसे समझाया बेटा आगे बढ़ने के लिए हर व्यक्ति को कहीं ना कहीं से शुरुआत करनी पड़ती है। तुम अपने आप को इस तरीके से तैयार करो। इन छोटी-छोटी बातों से तुम्हें कभी परेशान ना होना पड़े और एक दिन ऐसा आए तुम इन सब बच्चों से आगे निकलो और अपनी कक्षा में नंबर एक पर रहकर सबसे ऊपर खड़े दिखाई दो। राम के मन की परेशानी काफी हद तक दूर हो गई और उसने पूरी लग्न से अपनी पढ़ाई शुरू कर दी। अपनी नवी और दसवीं कक्षा में अपनी मेहनत के साथ राम ने पूरे स्कूल को टॉप किया और बड़ी-बड़ी गाड़ियों में आने वाले बच्चों के सामने खड़े होकर टॉपर की ट्रॉफी लेते हुए अपने लिए सभी बच्चो को अपने लिए ताली बजाने के लिए मजबूर कर दिया।

राम के पिता की छाती गर्व से चौड़ी हो गई और उन्होंने राम को खुशी से गले लगा लिया। राम अपने पिता के सही मार्गदर्शन से एक बार फिर कक्षा में सबसे आगे बढ़ गया। पहले की तरह उसकी कक्षा के सारे साथी उसके पास आकर बाते करते थे। लेकिन अब उससे पढ़ाई अच्छी करने के लिए पूछा करते थे। अपनी पढ़ाई की बदौलत अब राम दूसरे बच्चो के माँ बाप के लिए एक उदाहरण बन चुका था। अब सभी बच्चो के माता पिता अपने बच्चो को राम जैसा बनने के लिए कहते है।

■ नीरज त्यागी

जानें इन देशों के बारे में

1. छींकते समय आपके दिल की धड़कन कुछ मिली सेकेंड के लिए रुक जाती है।
2. हाथ की उंगलियों के नाखून, पैरों की उंगलियों के नाखूनों के मुकाबले चार गुना ज्यादा तेजी से बढ़ते हैं।
3. लगातार एक घंटा हेडफोन लगाने से कान में 700 गुना ज्यादा कीटाणु बढ़ जाते हैं।
4. क्या आप जानते हैं कि आंखें खोलकर छींकना असंभव है। अगर आप आंखें खोलकर छींकने का प्रयास करेंगे तो आपकी आंखों की पुतली बाहर आ जायेगी इसीलिए ऐसा करने की कोशिश भी ना करें।
5. इंसान के लिए अपनी खुद की कोहनी चाटना असंभव है।
6. छिपकली का दिल एक मिनट में एक हजार बार धड़कता है और वहीं इंसानों का दिल केवल 72 बार।
7. बिच्छू पर थोड़ी शराब डाल दी जाये तो बिच्छू पागल हो जाता है और खुद को काटने लगता है।
8. दुनिया में आज भी 30 आबादी ऐसी है जिन्होंने कभी मोबाइल नहीं चलाया।
9. समुद्री केकड़े का दिल उसके सिर में होता है।
10. तितलियां चीज़ों का स्वाद अपने पैरों से पता करती हैं।
11. इंसानों वाली गर्भ निरोधक गोलियां गोरिल्ला पर भी समान असर करती हैं।
12. इंसान की 25 हड्डियां केवल पैरों में ही होती हैं।
13. कंगारू कभी उल्टा नहीं चल सकते।
14. मछलियों की याददाश्त केवल कुछ ही सेकेण्ड तक की ही होती है
15. प्याज काटते समय च्वइंमगम चबाने से आखों से आंसू नहीं आते।
16. सपना देखते समय पढ़ना असंभव है।
17. शाम के मुकाबले आप सुबह 1 सेंटीमीटर लम्बे होते हैं।
18. गधा अपने चारों पैरों को एक साथ देख सकता है।
19. मानव मस्तिष्क 80 पानी से भरा हुआ है।
20. आप जिस हाथ से लिखते हैं उस हाथ की उंगलियों के नाखून ज्यादा तेजी से बढ़ते हैं।
21. राहुल गांधी राजनेता के अलावा एक लाइसेंस पायलट और एकिडो मार्शल आर्ट में ब्लैक बेल्ट हैं।
22. चीन में एक लड़के ने सिर्फ आईपैड खरीदने के लिए अपनी किडनी बेच दी थी।
23. अनिल कपूर जब पहली बार मुंबई शिफ्ट हुए थे तो राज कपूर के गैराज में रहते थे।
24. विश्वकप के एक सीजन में सबसे ज्यादा शतक लगाने वाले दुनिया के इकलौते कप्तान हैं सौरव गांगुली।

गुदगुदी

हवलदारः सर, हमने शराब से भरा ट्रक पकड़ा है।
इंस्पेक्टरः शाबाश, बहुत अच्छे।
हवलदारः अब आगे क्या करना है?
इंस्पेक्टरः अब एक ट्रक सोडा और एक ट्रक नमकीन भी पकड़ लो।

»»»»»»»»»»»»»»»

संता पाजी की नयी नयी शादी हुई, नई नवेली दुल्हन रात को संता से शिकायत करती है
प्रीतोः सुनो जी, इस खिड़की पे परदे लगवा दो
संताः क्यों ?
प्रीतोः वो पड़ोसी मुझे बार बार देखने करता रहता है
संताः तो एक बार ठीक से देख लेने दो खुद ही परदा लगवा लेगा ?

»»»»»»»»»»»»»»»

पति ने नहाने के बाद बाथरूम से आवाज़ लगाई : सुनो ज़रा तौलिया देना मेरा
पत्नी (गुस्से में): तुम हमेशा तौलिये के बिना ही क्यों जाते हो ? अब नाश्ता बनाऊँ या तुम्हें तौलिया दूँ ?
बनियान भी धोकर नल पर टाँग देते हो वो भी मैं उठाऊँ, नहाने के बाद वाइपर भी नहीं मारते तुम , कल तो लाइट भी बंद नहीं की. गीले पैर लेकर बाहर आते हो पहर पूरे घर में घुमते हो फिर उस पर मिट्टी पड़ जाती है और सारा घर गंदा हो जाता है , अपनी कामवाली बाथरूम साफ़करने गयी फिसल कर गिर गयी और 3 दिन नहीं आयी , कितना बुरा हाल हुआ था मेरा काम करके..?
पति (मन में सोचते हुए) : तौलिया माँग कर गलती कर दी या शादी करके

»»»»»»»»»»»»»»»

मुझे किसी ने सलाह दी की बीवी से बहस में नहीं जीता जा सकता इसलिए बस मुस्कुरा दिया करो
मैंने भी कोशिश की ????
बीवी : बहुत हंसी आ रही है आजकल तुम्हे ? लगता है तुम्हारा भूत उतारना ही पड़ेगा ?

»»»»»»»»»»»»»»»

पति ने पत्नी से कहा पिछले महीने का हिसाब दो
पत्नी ने हिसाब लिखना शुरू किया और बीच बीच में लिखने लगी भ. जा. कि. गे.
800भ. जा. कि. गे .
2000भ. जा. कि. गे .
500भ. जा. कि. गे .
पति ने पूछा ये भ. जा.कि. गे की क्या है?
पत्नी : भगवान् जाने किधर गए?

»»»»»»»»»»»»»»»

गणेश जी की दो पत्नियाँ है रिद्धि और सिद्धि
और इन्सान की एक ही है और वो भी जिद्दी

»»»»»»»»»»»»»»»

पत्नी : तुम मेरे साथ करवाचौथ का व्रत रखोगे ना ?
पति : मैंने तुम्हें कभी कहा मेरे साथ दारु पीने चलो

»»»»»»»»»»»»»»»

पप्पू एक बार पार्टी में गया ,
वहाँ उसने दबा दबा के 10 बटर नान खा लिए ,,
थोड़ी देर बाद पेट में दर्द हुआ,,
भाग कर टॉयलेट में गया,,
पेट पकड़ कर बोला. बहुत दर्द हो रहा है.. हे भगवान या तो जान निकाल दे या नान निकल दे

»»»»»»»»»»»»»»»

संताः क्या बात है? बड़ा फ्रेश लग रहा है!
बंताः हां मैं सुबह सैर पे जाता हूं! पहले मैं पैदल ही जाता था... अब मैंने बाइक से जाना शुरू किया है अब थकान भी महसूस नहीं होती, और टाइम भी बच जाता है!

पाठक अपने सुझाव, जिज्ञासाएं, लेख, कलात्मक कार्य, चुटकुले इत्यादि इस पते पर भेज सकते हैं। स्टार सन्डे, स्टार समाचार, मुख्तियार गंज, सतना- 485001
Email: starsunday.starsamachar@gmail.com, Contact: 9425813221

epaper.starsamachar.com

सांच कहै ता मारन धावै



■ जयराम शुक्ल

रहिमन विपदा हू भली जो थोरे दिन होय..!

संकट के समय मनुष्य फिलास्फर बन जाता है। फुरसतिया बैठे नाना प्रकार के ख्याल आते रहते है- आखिर साथ क्या जाएगा। मुट्ठी बांधे आया है... हाथ पसारे जाएगा। आया है तो जाएगा राजा रंक फकीर..। लेकिन हमारे शास्त्रों ने मुसीबत में भी जीवन प्रबंध के सूत्र दिए हैं। भगवान राम के वनगमन के दिनों दिन निषादराज ने पेड़ की उभरी हुई जड़ की तकिया और सूखे पत्ते के बिछौने में सोते हुए देखा तो रोने लगा। प्रभु की ये दशा देखी नहीं जाती। लक्ष्मण ने निषादराज के आंसू पोछते हुए कहा कि व्यर्थ चिंतित होते हो... प्रभु पूर्ण आनंद में हैं...। मुसीबत को अपने अनुकूल बना लेने की कला सिर्फ हमारे देश में है। दो शब्दों का सूत्र है, इसे नोट करके रखिए। यदि अच्छा ही अच्छा हुआ तो कृतज्ञ मनुष्य कहता है- ये प्रभु की कृपा है। संकट या विपत्ति आ जाए तो- यही प्रभु की इच्छा है कहकर आत्मा को संतोष देता है और बड़े बड़ा कष्ट झेल जाता है। पर ऐसे भी हैं हिरण्यकशिपु की तरह ऐको अहं द्वितीयोनास्ति..। वे भोग रहे हैं। अमेरिका, यूरोप को अपनी तरक्की पर बड़ा गुमान था। आर्थिक ताकत का डालर और सामरिक ताकत का एटम बम धरा का धरा हे। सब फिफियाते नजर आ रहे हैं।

करोना महामारी ने जीवन का यथार्थ बता दिया। मीडियावी युग में दुनिया और भी डरी है। पहले प्लेग और हैजा जैसी बीमारियों से शहर के शहर श्मशान में बदल जाते थे। आज के दौर-ए-तरक्की में मनुष्य की जिंदगी की कीमत भी बढ़ गई है। इसी कीमत के चलते वह ज्यादा डरा है..।

तुलसीदास कह गए-

धीरज, धरम, मित्र अरु नारी। आपतकाल परिखेहु चारी। परख के लिए आपत्ति का आना जरूरी है। ज़िंदगी की यह महत्वपूर्ण परीक्षा है। हर किसी के पास इसका एक सर्टिफिकेट होना चाहिए। इसकी पैरवी तुलसी के सखा रहीमदास कर गए हैं-

रहिमन विपदा हू भली, जो थोरे दिन होय।
हित-अनहित या जगत में, जान परत सब कोय।।

विपत्ति के समय यह समाज कैसा संव्यवहार करता है जानना जरूरी है। परीक्षाएं दो होती हैं एक सैद्धांतिक दूसरी व्यवहारिक। विपत्तिकाल मनुष्य की व्यवहारिक परीक्षा है। इस परीक्षा में परिजन, परजन, पालटीशियन सबकी टेस्टिंग हो जाती है। कोरोना ने यह समय दिया है। इसने यह बताया कि सब रिश्तों से ऊपर दर्द का रिश्ता होता है। ये दर्द का रिश्ता समूची मानवत को अपनी डोर में बांधे हुए है फिलहाल।

तमाम फिलॉसफी, विचार, मनन मंथन के बाद भी बहुत सारा वक्त बच जाता है कि अब क्या करें..। जब ऐसा लगने लगे तो कवियों की शरण में जाइए वे अपनी एक्सपर्ट राय देंगे। इमरजेंसी के दौर के श्रेष्ठ कवि सर्वेश्वर दयाल सक्सेना कभी ऐसी ही परिस्थिति से सो गुजरे होंगे सो उनकी एक कविता बांचे..

खाली समय में,
बैठ कर ब्लेड से नाखून काटें,
बढी हुई दाढ़ी में बालों के बीच की
खाली जगह छांटे,
सर खुजलाएं, जम्हुआए,
कभी धूप में आए,
कभी छांह में जाए,
इधर-उधर लेटें,
हाथ-पैर फैलाएं,
करवटें बदलें
दाएं-बाएं,
खाली कागज पर कलम से
भोंडी नाक, गोल आंख, टेढे मुंह
की तसवीरें खींचें
बार-बार आंखें खोले
बार-बार मींचें,
खांसें, खंखारें,
थोडा बहुत गुनगुनाएं,
भोंडी आवाज में,
अखबार की खबरें गाए,
तरह-तरह की आवाज
गले से निकालें,
अपनी हथेली की रेखाएं
देखें-भालें,
गालियां दे-दे कर मक्खियां उड़ाएं,
आंगन के कौओं को भाषण पिलाए,
कुत्ते के पिल्ले से हाल-चाल पूछें,
चित्रों में लड़कियों की बनाएं मूंछे,
धूप पर राय दें, हवा की वकालत करें,
दुमड़-दुमड़ तकिए की जो कहिए हालत करें,
खाली समय में भी बहुत से काम है
किस्मत में भला कहां लिखा आराम है!

खूब पढ़ो..घर में रहो..अगले हफ्ते फिर...

संपर्क: 8225812813



कर्फ्यू के दौरान, यूं करें वक्त का इस्तेमाल

एक ऐसे वक्त में जब भारत में कोरोना वायरस के मरीजों की संख्या 400 का आंकड़ा पार कर गयी है और इस बीमारी के चलते होने वाली मौतों में भी इजाफा हुआ है सावधानी ही बचाव है। डॉक्टर और सरकार लगातार इस बात को दोहरा रहे हैं कि फिलहाल इस बीमारी की कोई दवा नहीं मौजूद है इसलिए जितना हो सके व्यक्ति घर में रहे और बाहर निकलने से उचित दूरी बनाए रहे। आज देश में ऐसे लोगों की एक बड़ी संख्या हो गयी है जो अपने अपने घर पर रहकर दफ्तर का काम कर रहे हैं और खुद को इस बीमारी की चपेट में आने से बचा रहे हैं। यूं तो मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है उसके लिए समाज जरूरी है। लेकिन क्योंकि ये बीमारी का वक्त है इसलिए ज्यादातर लोग अपने-अपने घरों पर मौजूद हैं। आनंद महिंद्रा भी अपने घर पर हैं और खुद का बचाव कर रहे हैं। इस दौरान महिंद्रा बहुत कुछ इनोवेटिव भी कर रहे हैं और हमें उनसे प्रेरणा लेनी चाहिए और अपना सेल्फ आइसोलेशन भी इनोवेटिव बना लेना चाहिए।

आनंद महिंद्रा ने एक तस्वीर अपनी ट्विटर टाइम लाइन पर शेयर की है। उस तस्वीर के जरिये आनंद महिंद्रा ने देश दुनिया के लोगों को समझाने का प्रयास किया है कि कैसे वो सामाजिक दूरी बनाए गए हैं और इस दौरान जिन चुनौतियों का सामना वो कर रहे हैं उससे वो कैसे निपट रहे हैं। आनंद महिंद्रा द्वारा पोस्ट की गयी इस तस्वीर को देखें तो हमें इसके कई दिलचस्प पहलू नजर आ रहे हैं। उन्होंने अपने घर के अलग अलग हिस्सों को मेट्रो स्टेशन के स्टेशनों का नाम दे दिया है। नक़्शे के अनुसार आनंद महिंद्रा के घर का नाम डाउन टाउन है जबकि वो अपने डाइनिंग रूम को क्राव फोर्ड मार्केट कह रहे हैं। सोशल मीडिया पर बहुत तेजी के साथ वायरल हो रही आनंद महिंद्रा के घर की इस इमेज में उन्होंने ये बताया है कि उनके घर का कौन सा हिस्सा कहां हैं।

हॉबी को करिये पूरा

घर पर रहना या ये कहें कि सेल्फ डिस्टैन्सिंग आपको केवल कोरोना वायरस से नहीं बचा रही बल्कि इसने आपको वो मौका भी दिया है जिसमें आप अपनी हॉबी को भी पूरा कर सकते हैं। मान लीजिये कि आपको पेंटिंग या फोटोग्राफी का शौक हो तो इस शौक को आप घर पर रहकर यूट्यूब के जरिये और निखार सकते हैं।

साथ ही आनंद महिंद्रा ने अपने घर के अलग अलग हिस्सों को अलग अलग रंगों की लाइंस से जोड़ा है जो अपने आप में काफी इनोवेटिव है। इस इमेज को अगर ध्यान से देखें तो मिलता है कि घर पर रहकर आनंद महिंद्रा ने अपनी रचनात्मकता का परिचय दिया है। अब चूंकि आनंद महिंद्रा की ही तरह हम और आप भी अपने अपने घरों में हैं तो आइये जानें कि हम और आप इस सोशल डिस्टेंसिंग को कैसे बना सकते हैं इनोवेटिव?

कुछ लिखिए

दिन भर घर पर रहना वाक़ई अपने आप में एक टेढ़ी खीर है। आदमी समाज से अलग रहेगा तो उसका बोर होना लाजमी है इसलिए इन दिनों आपका जैसा दिन बीत रहा है या जिन चुनौतियों का सामना आप सोशल डिस्टैन्सिंग के तहत घर पर कर रहे हैं उसे लिखिए। क्या पता कल पाठकों के हाथ एक अच्छी किताब ही लग जाए।

गाना गाइये, आवाज़ अच्छी होगी

भारत में रहने वाला हर दूसरा व्यक्ति बाथरूम सिंगर है। मौका अच्छा है उठा लीजिये फायदा। ये वो वक्त है जब आप घर में रहकर अपने गाने की प्रैक्टिस कर सकते हैं। बुरा भी हुआ तो कोई बात नहीं। वो कहावत है न करत-करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान क्या पता कल को आप अच्छा गाना ही गाने लग जाएं।

खुद का ध्यान रखिये

अंत में बस इतना ही कि इस सेल्फ आइसोलेशन का मकसद आपको कोरोना के खतरों से बचाना है। तो ये एक ऐसा समय है जब आपको खुद का ध्यान रखना है। इसलिए घर पर रहें और सुरक्षित रहें।

मनपसंद खाना बनाइये

कहा जाता है कि चिंता कितनी ही बड़ी क्यों न हो उसे भगाने का सबसे अच्छा तरीका कुकिंग या ये कहें कि खाना बनाना है। तो ये सेल्फ डिस्टैन्सिंग आपको वो मौका भी दे रही है जो आने वाले वक़्त में आपको एक उम्दा कुक बना सकती है। तो अब देर किस बात की लग जाइये काम पर और बना दीजिये अपनी मन पसंद की डिश।

रिश्तेदारों के हाल चाल लेने का वक्त

जैसा कि हम बता चुके हैं की कोरोना वायरस से बचने का सबसे आसान इलाज घर पर रहना है। साथ ही हमने ये भी बताया कि घर पर रहना बिलकुल भी आसान नहीं है। इसलिए ये वो मौका है जब आप अपने उन तमाम दोस्तों और रिश्तेदारों का हाल चाल ले सकते हैं जिनसे आप वक्त की कमी के चलते बरसों से बात नहीं कर पाए हैं।

घर के सदस्यों से बात करें

हम एक ऐसे दौर में हैं जो तकनीक का युग है। इस युग में लोग फेसबुक और वॉट्सऐप पर तो खूब लोगों से बातें करते हैं मगर जब बात अपने आस पास के लोगों से बात करने की आती है तो व्यक्ति ख़ामोश ही रहता है। तो ये एक ऐसा समय है जो आपको फ़ोन और लैपटॉप को दरकिनार करके घर के बाकी सदस्यों से बात करने का मौका दे रहा है तो इस मौके का पूरा फायदा उठाइये और अपने घर के सदस्यों से बात करिये।

सीखिए टाइम मैनेजमेंट

एक बहुत बड़ा तबका है जिसका मानना है कि घर में दिन पहाड़ जैसा गुजर रहा है। घंटे बीत ही नहीं रहे। तो बता दें कि ये वो वक्त है जब आप टाइम मैनेजमेंट के गुण सीख सकते हैं। इसके लिए आपको ज्यादा कोई मेहनत करने की ज़रुरत नहीं है। बस आपको करना ये है कि जो टाइम है आपके पास उसे लिस्ट डाउन करें और उसी के अनुरूप काम करें। इससे आपको आज और भविष्य दोनों में फायदा होगा।

करिये योग का अभ्यास

बीजी लाइफस्टाइल में स्वस्थ्य रहना अपने आप में एक बड़ी चुनौती है इसलिए सेल्फ डिस्टैन्सिंग के तहत घर पर रहना वो मौका है जब आप योग कर सकते हैं और अपने को निरोगी बना सकते हैं। क्या पता इस दौरान किया गया आपका योग ही आपको कोरोना के जानलेवा वायरस से बचा ले।

प्रकृति को दीजिये समय

आप घर से बाहर नहीं जा पा रहे हैं कोई बड़ी बात नहीं है ये आपकी ही सेहत के लिए अच्छा है। ये सेल्फ डिस्टैन्सिंग वो मौका है जब आप पेड़ पौधों को समय देकर प्रकृति के करीब जा सकते हैं। जाइये प्रकृति के करीब देखिये उसे। वो वैसी बिलकुल नहीं है जैसी वो आपको अपने दफ्तर के क्यूबिकल से दिखती है।

epaper.starsamachar.com